Review Of Research
ISSN 2249-894X

Impact Factor : 3.1402(UIF)
Volume - 5 | Issue - 2 | Nov - 2015

''आत्मजयी खण्डकाव्य में अस्तित्ववादी विचार''

प्रा. झाकीरहुसेन मुलाणी
विठ्ठलराव शिंदे आर्टस कॉलेज, टेंभुर्णी ता. माढा, जि. सोलापूर ।

प्रस्तावना:

१९४३ के बाद हिंन्दी कविता ने करवट ली, उसका आधार, प्रेरणा और विचार एव पृष्ठभुमि पूरी बदल गयी थी। युग के साथ कविता के स्वभाव में परिवर्तन स्वाभाविक बात है, किन्तु स्वरूप भी बदलना यह विशष बात थी। अभिव्यक्ति की पध्दति मुश्किल से आसान बनना साहित्य समाज के लिए गौरव की बात होती है। हिंन्दी कविता भारतीय विचारों का मात्र वहन नहीं करती, अपितु विश्व विचार का प्रभाव धीरे-धीरे बढते जा रहा था। उसका प्रतीक प्रयोगवादी एव नयी कविता है। मार्क्सवादं, यौनवाद और अस्तित्ववाद इस युग की और कविता की ही देन है, विचारों का वैश्विकरण समाज आत्मसात करता है। इस प्रवृत्ति की देन विचार के स्तर पर दुनियॉ का एक-दूसरे में मेल भी मानना चाहिए।

अस्तित्ववादी दर्शने भारतीय विदवान और साहित्यकारों को आकर्षित किया है। प्रगतिवादी कविता सामाजिक सोच में बंधी कविता है तो प्रयोगवादी और नयी कविता वैयक्तिक्ता लेकर चलनेवाली कविता है। विश्व में मार्क्स का साम्यवाद, फ्रायड का यौनवाद और कीर्केगार्ड का अस्तित्ववाद चर्चा का विषय रहा। विचार की विशेषता यह होती है कि वह हवा और आग की तरह चारों दिशाओं में फैलता है अथवा दुनिया को अपनी चपेट में लेता है, भारतीय साहित्य भी इससे अधूता नहीं है। यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते कविता की मान्यता या कानून पूरी तरह से बदल गया है। व्दिवेदी युग के कानून के सीने पर यह कविता गहरी चोट करती है। हमने औरों से कुछ चिन्तन लिया है तो दुनिया ने भी हमसे बहुत कुछ लिया है। दुनिया हमेशा भारतीय चिन्तकऔर चिन्तन की कायल रही है।

अज्ञेय का तार सप्तक मील का पत्थर है, उसी परंपरा का निर्वाह कुँवर नारायण जीने किया है। अस्तित्ववादी विचार के प्रवर्तक कीर्केगार्ड वैयक्तिक चेतना को महत्व देते है। कुँवर नारायण पर अस्तित्ववादी चिन्तक कीर्केगार्ड नीत्शे, कार्ल यास्पर्स, अलबेयर कामू, दास्ताबोस्की और पाल सार्त्र का प्रभाव निश्चित रूपसे है। उसी की देन 'आत्मजयी' खण्डकाव्य है। आस्था-अनास्था, सामाजिक और वास्तववादी दृष्टिकोण से विचार करने वाले चिन्तक अस्तित्ववादी है। अस्तित्ववादी विचारों का मृत्यु, भय और संत्रास आधार रहा है। क्षणवाद, महामानववाद, यौनवाद और विकासवाद आदि में कम-अधिक रूप में अस्तित्ववाद की झ ालक प्राप्त होती है। कुँवर नारायणजी भी अस्तित्ववादी चिन्तन से काफी प्रभावित है। उन्होंने नचिकेता प्रसंग से व्यक्तित्व, मृत्यु और इश्वर को इसी कारण जोडा है। मृत्यु अटल है किन्तु असके संत्रास से मुक्ति का प्रयत्न और उसके उपरान्त जीवन के प्रति आस्था अस्तित्ववादी चिन्तन का प्रभाव है।

अस्तित्ववाद का जन्म निराशा की कोखसे होता है, बुध्द भी निराशा के कारण जीवन का सही अर्थ ढूँढने के लिए संसार को त्यागकर गये थे। जिससे नव निर्माण की संभावना अधिक रहती है। कुँवरनारायण का आत्मजयी व्यक्ति के जीवन के प्रति आस्था और आत्मा पर विजय की कहानी है, ज्यों सृजनात्मक जीवन की ओर बढने की प्रेरणा देता है। नचिकेता की अपनी आत्मापर विजय प्राप्त होना आत्मजयी खंडकाव्य की कहानी है। पिता के निरर्थक तत्वों का विरोध कर वह मृत्यु के भय से आझाद होकर अपने अस्तित्व के प्रति जागृत हो जाता है - जैसे

''मैं
सभी दिशाओं में प्रतिक्षण उत्पन्न
विभासित
आरंभित
अनुसृष्टि नहीं - सृष्टा स्वरूप

लाखों निर्माण में गलता-ढलता
कोई अव्यय भविष्य .....
मैं जागृत हूँ
मैं जागृत हूँ।''

अस्तित्ववाद की मूलभुमि इसी जागृति की है, जिस मे व्यक्ति-स्वातंत्र्य कि सोच छीपी है। नचिकेता अपने पिता राजा वाजश्रवा का विरोध करता है, वह जानता है कि उनके तत्व खोकले हैं, जिससे उनके भविष्य का निर्माण नहीं हो सकता, उनका अस्तित्व मिट सकता है। नचिकेता आधुनिक पिढी का तो वाजश्रवा परंपरावाद के प्रतीक है। नया युग पुरातत्वों का स्वीकार नहीं अपितु बेझीझक विरोध करता है। हालाकि अपने अस्तित्व के प्रति सजग है। नयी पिढीने अपनी आत्मा पर विजय प्राप्त की है। परंपरा विरोधी नचिकेता का कतई धर्मग्रंथों और ईश्वर पर विश्वास नहीं है। नचिकेता मानता है कि अमरत्व सदियों तक तपस्याओं में जीने की क्षमता निर्माण करता है, जिससे वास्तव जीवन को मूल्य प्राप्त होते है, जिससे मानव जीवन को अर्थवत्ता प्राप्त हो जाती है। नचिकेता के शब्दों में ङ

''ओ मस्तक विराट !
अभी नहीं मुकुट और अलंकार।
अभी नहीं तिलक और राज्यभार।
तेजस्वी चिंतित ललाट/ दो मुझको
सदियों तपस्याओं में जी सकने की क्षमता।
पाऊँ कदाचित वह इष्ट भी
कोई अमरत्व जिसे .....। ''

नचिकेता की सोच स्वतंत्र है। वह पुराणी पिढी से मेल नहीं खाती। वह परम्परा, ईश्वर और धर्म के घिसे-पिटे ग्रंथों को नहीं मानता, वह गलत धारणा और परंपराओं पर उंगली रखता है ङ

''वक्ता चढावे के लालच में
बॉच रहे शास्त्र-वचन
ऊँघ रहे श्रोतागण।.....
.....
यह दान? या अज्ञात बंधिकों से कोई अशुभ समझौता?
पिता,
ये कैसी स्तुतियाँ हैं, जिनसे
पाखंड की गंध आती है।.....''

नचिकेता पाखंड और झूठी मान्यताओं का विरोधी है, ईश्वर का अस्तित्व भी उसे स्वीकार नहीं है, जैसे-

''यह धर्म नहीं- धर्म सामग्री का प्रदर्शन है
....
तुम जिनसे माँगते हो
मुझे उनकी माँगो से डर लगता है।''

मानव कुछ माँगे तो मानव से नहीं अपितु ईश्वर से माँगता है, बदले में ईश्वर माँगने वाले से भी बहुत कुछ माँगता है। नचिकेता सोच में प्रौढता के कारण पिता वाजश्रवा से कहता है कि पिता तुम भविष्य के अधिकारी नहीं हो। अर्थात उसके पिता का कोई भविष्य नहीं हो सकता की भविष्य वाणी नहीं तो और क्या है ? वाजश्रवा क्रोध शाप देते है 'मृत्युवे त्वा ददामिं '। नचिकेता की व्यक्तिगत उद्घोषणा उसके स्वतंत्र अस्तित्व का बोध करती है, जैसे

''मैं अपनी अनास्था में
अधिक सहिष्णू हूँ... !

अपने अकेलेपन में
अधिक मुक्त।
अपनी उदासी में
अधिक उधार।''

मानव जीवन में मृत्यु अटल है, उसे आसान करने का तरीका अस्तित्ववादी चिंतन का विषय है। जीवन की विषम स्थिति मृत्यु, ज्यों जीवन के साथ जुडी है। जीवन और मृत्यु दोनों में से किसी एक को चुनना असंभव है। जिससे मानव का जीवन दु:ख और खालीपन से भरा है। जीवन और मृत्यु के बीच संघर्षरत मनुष्य अस्तित्व के प्रति निराश है, यही सच्चाई निम्न पंक्तियों स्पष्ट होती है ञ

''खोखला दर्द
गहरा विराग
बस, होने भर का थका ज्ञान।''

मन में बसा संमदर ओर बोझ जिसे मानव अपने खंदे पर हर पल ढोता है। नचिकेता इसे ही मानव की हताशा या हार मानता है, जैसे ञ

''जीवन का एक हताश बिंदु।
चेतना केंद्र, चिंतित मनुष्य
भयभीत अधर में टँगा अुआ
अस्तित्व मरण के अधरों से
कुछ बचा हुआ, कुछ लगा हुआ....। ''

अस्तित्व का अर्थ बोध करनेवाला मृत्यु है। अस्तित्ववादी विचारों के शुरूवात जीवन में व्याप्त निराश से होती है। मानव का हर कार्य निरर्थक हो तो उसे मूल्य कैसे प्रास्त हो सकता है? नचिकेता की दृष्टि में ञ

''एक दृष्टि चाहिए मुझे -
जीवन बच सके
अंधेरा होने से बस।''

मानवीय जीवन की विडम्बना देखो वह मृत्यु समय में अकेला होता है और अजनबी भी । नचिकेता आत्मबोध की चेतना से गुजरता है ञ

''कुछ ऐसे अपराधी साबित हूँ
मानों अपना ही हत्यारा हूँ।
जीवन में यह कैसा कुटिल व्दैध?
ये कैसे विधान- निर्भय जीवन अवैध?
जीवित हूँ या केवल अपहृत?
संज्ञा हूँ या केवल व्यहहृत? ''

हिंन्दी के कुछ आलोचक यह भी मानते है कि भारतीय दर्शन और अस्त्विादी चिन्तन इनका सुन्दर मेल 'आत्मजयी ' खंडकाव्य है किन्तु यह सर्वथा सत्य नहीं है। दोनों चिन्तनों में जमीं अस्माँ का अन्तर है। 'आत्मजयी' कुँवर नारायण लिखित खण्डकाव्य भारतीय साहित्यकार व्दारा रचा आत्मसम्मान, आत्मबोध एवं आत्मा की जय का सुन्दर प्रबंध है। सफलता पर सार्थकता की विजय 'आत्मजयी' का प्रतिपादय है।

निष्कर्ष :- सफलता एक अर्थ तक ठिक है किन्तु सार्थकता आत्मा की विजय है। व्यक्तिगत सुखों के लिए जीना जीवन का लक्ष्य नहीं हो सकता। अपना अस्तित्व स्थापित या प्रमाणित करनेवाला मानव व्यक्ति स्वातंत्र्या को उदघोषित करता है। नचिकेता का मृत्यु पर विजय अस्तित्ववादी विचार की ही देन है।

''मैं जिन्दगी से भागना नहीं
उससे जुडना चाहता हूँ

उसे झकझोरना चाहता हूँ। अस्तु !! ''

संदर्भ :-

१) हिन्दी साहित्य का इतिहार - डॉ. नगेंद्र
२) आत्मजयी - डॉ. कुँवर नारायण.
३) नयी कविता के धरातल - डॉ. हरिशरण शर्मा।
४) आत्मजयी में आधुनिक चिंतन - संदिप रणभिरकर।